Journal of Advances in Developmental Research (IJAIDR)

E-ISSN: 0976-4844 ● Website: www.ijaidr.com ● Email: editor@ijaidr.com

चीनी यात्रि फाह्यान द्वारा बौद्धधर्म का ऐतिहासिक पर्यवेक्षण

Kritika Pareek[1], Dr. Shish Ram Boyat[2]

[1]Research Scholar, [2]Supervisor
Dept. of History
OPJS University, Churu, Rajasthan

सार:
इतिहास लेखन की शब्दावली में जिसे हमें मध्यकाल और आधुनिक काल कहते हैं। उस युग में चीनी वासियों की भारतीयों और भारतवर्ष के सम्बन्ध में जो चाहे दृष्टि हो परन्तु प्राचीन भारत में उनकी दृष्टि श्रद्धा, विश्वास, आदर्श, आस्था और आदर्श भाव से ओत-प्रोत थी। बौद्ध धर्म की जनक पावन भूमि के प्रति चीनी यात्रियों को जो आकर्षण, लगाव और श्रद्धा भाव था, उसका पता हमें उनके विवरणों से मिलता है। भारत आने वाले प्रमुख चीनी यात्रियों में फाह्यान व ह्वेनसांग प्रमुख थे। फाह्यान के विवरण महत्त्वपूर्ण हैं।

संकेत शब्द: अनुशासनहीनता , परिनिर्वाण, जीवनकाल ।

परिचय

इन चीनी यात्रियों का भारत भ्रमण का ध्येय बौद्ध-तीर्थ स्थलों की यात्रा करना और बौऋ ग्रन्थों का संग्रह करना था। उन्होंने भारत में जिस स्थान की भी यात्रा की, वहां पर स्थित विहारों की संख्या का प्रमुखता से वर्णन किया है। इसके अतिरिक्त ह्वेनसांग के विवरण भारत में प्रचलित धार्मिक मान्यताओं एवं रीति-रिवाजों पर भी प्रकाश डाला है। उनके विवरण अधिकांशतः बौद्ध धर्म के विषय में हैं। लेकिन यदा-कदा अपने लेखों में हिन्दू धर्म और जैन धर्म पर भी प्रकाश डाला है। उनके विवरणों से ज्ञात होता है कि इन यात्रियों के भारत यात्रा समय बौद्ध धर्म का ह्रास हो रहा था। हिन्दू धर्म प्रगति में था। जैन धर्म कुछ क्षेत्रों तक सीमित था।

बौद्धधर्म का ऐतिहासिक पर्यवेक्षण

महात्मा बुद्ध ने अपनी शिक्षाओं का उपदेश प्रधानतया मगध और कौशल जनपद तथा शाक्य, लिच्छवी और मल्ल गणराज्यों में किया था। राजगृह एवं श्रावस्ती में उन्होंने सबसे अधिक वर्षावास व्यतीत किए। अपने जीवन काल में बुद्ध ने अपने शिष्यों को अपनी शिक्षाओं के प्रसार के लिए प्रोत्साहित किया। बौद्ध साहित्य में बुद्ध के परिनिर्वाण के समय उनके शरीरावशेषों को प्राप्त करने के लिए आठ राजाओं द्वारा कुशीनगर पहुंचने का और बुद्धावशेषों को प्राप्त करने का उल्लेख मिलता है। उन्होंने बुद्धावशेषांक को प्राप्त कर उन पर स्तूपों का निर्माण करवाया। इससे संकेत मिलता है कि इन क्षेत्रों में बुद्ध के जीवनकाल में बौद्ध धर्म का प्रचार हो चुका था। बौद्ध धर्म के विदेशों में प्रचार के सम्बन्ध में चीनी यात्रियों के विवरणों से भी महत्त्वपूर्ण सूचनाएं प्राप्त होती हैं।

फाह्यान और ह्वेनसांग के अनुसार बुद्ध ने मध्य भारत से वायु द्वारा गमन करके उद्यान गांधार, कश्मीर और उडियन की यात्रा की थी और उक्त स्थानों पर आध्यात्मिक शक्ति प्रदर्शन द्वारा लोगों को प्रभावित करके उनको अपना शिष्य बनाया था। लेकिन ऐसी घटनाओं की ऐतिहासिकता की पुष्टि संभव नहीं है। बुद्ध के महापरिनिर्वाण के लगभग 100 वर्ष के पश्चात् कालाशोक के समय में वैशाली के भिक्षुओं ने 'विनय' के नियम की अवहेलना शुरू कर दी थी। इस विवाद को शान्त करने के लिए वैशाली में द्वितीय संगीती का आयोजन किया गया था। लेकिन भिक्षुओं में कोई मतैक्य नहीं बन सका। ऐसा माना जाता है कि अशोक से पूर्व ही बौद्ध धर्म 18 सम्प्रदायों में विभक्त हो गया था। अशोक ने बौद्ध धर्म ग्रहण करके इसके प्रचार में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। ऐसी मान्यता है कि उसने बुद्ध के अवशेषों पर 84 हजार स्तूपों का निर्माण करवाया। उसने बौद्ध सम्प्रदायों में परस्पर मतभेद दूर करने के लिए पाटलिपुत्र में तृतीय संगीति का आयोजन किया। उसने बौद्ध धर्म के प्रचारक यूनान, मिस्र, सीरिया, मध्य एशिया, लंका और बर्मा आदि में भेजे। लेकिन उसकी मृत्यु के पश्चात् शुंग वंश की स्थापना से बौद्ध धर्म के प्रसार में कुछ विराम आया। यद्यपि इस काल में सांची तथा भारहुत जैसे स्तूपों की भी स्थापना हुई लेकिन बौद्ध धर्म मध्य भारत की अपेक्षा परिश्मोत्तर भारत से लेकर मध्य एशिया तक अधिक प्रसिद्धि प्राप्त कर रहा था। इसके प्रचार-प्रसार में दो विदेशी शासकों यवन शासन मिनेण्डर और कुषाण शासक कनिष्क के नाम उल्लेखनीय हैं। मिनेण्डर ने बौद्ध भिक्षु नागसेन के प्रभाव में आकर बौद्ध धर्म ग्रहण किया। उसने अपनी राजधानी शाकल को अनेक स्तूपों और संघारामों से सुसज्जित किया। नागसेन के साथ उसके संवाद का विवरण मिलिंदपन्हों से मिलता है। लेकिन कुषाण शासक कनिष्क के शासनकाल में बौद्ध धर्म का प्रचार मध्य एशिया तक फैला हुआ था। उसने राजधानी पुरुषपुर में अनेक स्तूपों,

विहारों और स्मारकों का निर्माण करवाया उसके द्वारा पुरुषपुर में निर्मित स्तूप विश्व के आश्चर्यों में अपना स्थान रखता था। कनिष्क के ही शासन काल में कश्मीर में चतुर्थ बौद्ध संगीति का आयोजन किया गया। ताकि बौद्ध सम्प्रदायों में एकता स्थापित हो सके। कनिष्क के समय में बौद्ध धर्म के प्रचार के लिए चीन, जापान, तिब्बत, कोरिया, ईरान और मैसोपोटामिया आदि देशों में गए। उसी के प्रयत्नों से महायान मत प्रभावशाली बना व गांधार मूर्ति कला का विकास हुआ। लेकिन कुषाण वंश के पतन के बाद बौद्ध धर्म प्रचार-प्रसार की गति मन्द पड़ गई।

फाह्यान के समय बौद्ध धर्म

फाह्यान ने गुप्त काल में जब भारत की यात्रा की तो उसने बौद्ध धर्म से सम्बन्ध रखने वाले स्थानों को भग्नावशेषों के रूप में पाया। उसने अपनी भारत की यात्रा उधान से प्रारम्भ की जो उस समय बौद्ध धर्म का समृद्ध केन्द्र था। यहां उसने बुद्ध के पद चिन्हों के दर्शन किए। यहां से दक्षिण दिशा में चलकर गांधार और तक्षशिला की यात्रा की। तक्षशिला से चलकर वह पुरुषपुर, हृदि नगर (जलालाबाद) गया उसने पुरुषपुर में कनिष्क द्वारा निर्मित सतूप की अतुलनीय विशालता का वर्णन किया है। नगर (जलालाबाद) से आधा योजन दूरी पर उसने एक गुफा देखी जहां बुद्ध अपनी छाया छोड़ गए थे। यहां से वह पंजाब में हिद्दा नामक स्थान और उसके बाद मथुरा गया। जहां असंख्य बौद्ध भिक्षु निवास करते थे। मथुरा में उसने बुद्ध के 4 शिष्यों सारिपुत्र, मौद्धगल्यायन, आनन्द व राहुल के स्तूपों के दर्शन किए। मथुरा में ही 'अभिधमम' व 'विनय' के सम्मान में भी स्तूप निर्मित थे। मथुरा से 18 योजन चलकर वह दक्षिण-पूर्व दिशा की ओर सकाशथ राज्य में गया। यहां से कान्यकुब्ज की यात्रा करते हुए साकेत पहुंचा जहां बुद्ध द्वारा दांत साफ करने के बाद फेंके गए छिलके ने वृक्ष का रूप धारण कर लिया था। तत्पश्चात् उसने श्रीवस्ती का जेतबन विहार देखा। कपिलवस्तु की यात्रा से पूर्व उसने तीन बौद्धिसत्वों (कश्यप, ऋमुच्छद और कनक मुनि) के जन्म स्थान के दर्शन किए। कपिलवस्तु यद्यपि खण्डहर हो गया था, लेकिन बुद्ध से सम्बन्ध रखने वाले सभी स्थान पहचाने जा सकते थे। फिर भी वह लुम्बिनी गया। तत्पश्चात् उसने रामग्राम में स्थापित एक स्तूप का भ्रमण किया। जहां जंगली हाथी और शेर आया-जाया करते थे। राम ग्राम से उसने कुशीनगर की यात्रा की, कुशीनगर से वह वैशाली गया। फाह्यान ने इसको वही स्थान बताया है जहां मोर को बुद्ध ने तीन माह बाद संसार त्यागने का वचन दिया था।

गंगा नदी को पार करके वह अशोक की नगरी पाटलिपुत्र गया। लेकिन यहां बौद्ध धर्म पतनावस्था में था। यहां से वह बौद्ध गया, सारनाथ और राजगृह गया। इन स्थानों की यात्रा के पश्चात् उसने कौशाम्बी के घोषिताराम बिहार के दर्शन किए। इसके उपरान्त आंध्रकूट का भ्रमण किया और वहां 'सुरंगम सूत्र' का पाठ किया। इसके बाद वह विनय के सम्पूर्ण ग्रन्थों को एकत्रित करने के उद्देश्य से पुनः पाटलिपुत्र आया। लेकिन उसके अनुसार भारत में लेखबद्ध पुस्तकें अनुपलब्ध थी। क्योंकि अधिकांश पुस्तकें कंठस्थ करायी जाती थी। यहीं पर एक महायानी मठ से उसे महासांधिक विनय की एक प्रति मिली और दूसरे भाग में सर्वास्तिवाद का एक लेख मिला जिसमें 6-7 हजार गाथाओं के नियम थे। यह उसके लिए अधिक महत्त्वपूर्ण थी क्येंकि चीन में बौद्ध जैन अधिकतर इसी के नियम को मानते थे और सर्वास्तिवाद पर विश्वास रखते थे। पाटलिपुत्र में तीन वर्ष संस्कृत सीखने के बाद वह यहां से चंपा की राजधानी ताम्रलिप्ति पहुंचा, जहां दो वर्ष सूत्रों की प्रतिलिपियां तैयार की। इसके बाद वह एक व्यापारी जहाज में बैठकर सिंहल चला गया।

संक्षेप में फाह्यान ने अपनी यात्रा-विवरणों में केवल उन्हीं स्थानों से सम्बन्धित-प्रचलित कथाओं का वर्णन किया जिसके उसने दर्शन किए। उसके विवरणों से ज्ञात होता है कि उत्तरी भारत के अधिकांश बौद्ध धार्मिक स्थल जैसे कपिलवस्तु, गया, कुशीनगर आदि भग्नावस्था में थे। इससे प्रतीत होता है कि उत्तर भारत में बौद्ध धर्म का ह्रास हो रहा था। कपिलवस्तु में तो प्रजा व प्रशासन दोनों ही नहीं थे। जंगली जन्तुओं, शेर व हाथी आदि के भय से वहां पहुंचाना बहुत कठिन था। इस पतनावस्था के लिए अनेक कारण जिम्मेदार थे। फाह्यान ने जब भारत भ्रमण किया उस समय उत्तरी भारत का अधिकांश क्षेत्र गुप्त सम्राट चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य (375-412 ई.) के अधीन था। ज्ञातव्य है कि गुप्त सम्राट परम्-भागवत थे। उनके शासन काल में हिन्दू धर्म की पुनः उन्नति हुई। हिन्दू धर्म से सम्बन्धित विभिन्न साहित्य की रचना भी इसी काल में हुई। यद्यपि सभी गुप्त सम्राटों ने धार्मिक सहिष्णुता की नीति को अपनाया। उन्होंने बौद्ध मठों और विहारों आदि को भी सहायता प्रदान की। किन्तु बौद्ध धर्म की अपेक्षा जनसाधारण में हिन्दू धर्म लोकप्रिय हो रहा था। सम्भवतः इसी कारण फाह्यान ने बौद्ध धर्म स्थलों को उजड़ी हुई अवस्था में पाया। यद्यपि पंजाब, मथुरा व बंगाल के बौद्ध-विहारों में बौद्ध-भिक्षु रहते थे। लेकिन उनकी संख्या पहले के समान नहीं थी। फाह्यान के भारत भ्रमण के पश्चात् पांचवी सदी के उत्तरार्द्ध में बौद्ध धर्म की स्थिति में कुछ सुधार आया। उत्तर-गुप्त राजाओं विशेषकर कुमारगुप्त (412-455 ई०), बुद्धगुप्त (477-95 ई.), तथागत गुप्त (499-507 ई.), व बालादित्य आदि ने बौद्ध धर्म को प्रश्रय दिया। कुमारदित्य (शकरादित्य) ने नालन्दा बौद्ध विहार की स्थापना की थी। इसी काल में वल्लभी (गुजराज) भी बौद्ध शिक्षा केन्द्र के रूप में उभरा यहां राजा धरसेन द्वारा (580 ई.) में एक विहार बनवाया गया जिसका नाम बप्पदेव था। इसका निर्देशन आचार्य स्थिरमत करते थे। इत्सिंग के अनुसार वल्लभी का महत्त्व बौद्ध शिक्षा केन्द्र के रूप में, नालंदा से किसी प्रकार भी कम नहीं था। ह्वेनसांग ने यहां सौ विहार व छः हजार भिक्षु देखे थे। गुप्त काल में बौद्ध-भिक्षुओं के

लिए अनेक संघरामों, अजन्ता की कल तथा मथुरा एवं सारनाथ में बुद्ध सम्बन्धी अनेक प्रस्तर-मूर्तियों का निर्माण हुआ। इस काल में अनेक बौद्ध-विद्वान चीन आदि देशों से प्रचार हेतु गए।

हर्ष भारत का अन्तिम महान हिन्दू शासक था जिसने बौद्ध धर्म को प्रश्रय प्रदान किया। हर्ष के पूर्वज यद्यपि सूर्य के उपासक थे। अपने बांसखेडा अभिलेख में भी हर्ष स्वयं को परम-महेश्वर कहता है। किन्तु उसके बाद उसने बौद्ध धर्म अंगीकार कर लिया था। हर्ष ने कन्नौज की महासभा के अतिरिक्त प्रयाग में दान दिया और नालंदा विश्वविद्यालय को संरक्षण देकर अपार धन राशि प्रदान की।

संदर्भ ग्रन्थ सूची:

1. कनिंघम, ए., प्राचीन भारत का ऐतिहासिक भूगोल, इलाहाबाद, 1979
2. झा, डी.एन. कृष्णमोहन, प्राचीन भारत का इतिहास बुद्धिज्म इन
3. श्री माली , क्लासीकल ऐज, दिल्ली, 1985
4. पाण्डेय, वी.सी., प्राचीन भारत का इतिहास, दिल्ली, 2014
5. पाठक, विशुद्धानन्द, पांचवीं-सातवीं शताब्दी का भारत
6. बील, सैमुअल, बुद्धिस्ट रिकार्ड ऑफ द वेस्ट्न वर्ल्ड, दिल्ली, 1995
7. दी लाइफ ऑफ ह्वेनसांग, दिल्ली, 1973
8. दी ट्रैवल्स ऑफ फाह्यान एंड सुग युन, दिल्ली, 1998
9. मुखर्जी, पी.के., इंडियन लिट्रेचर इन चाईना एण्ड फार ईस्ट, कलकत्ता, 2012
10. मार्शल, नागौरी, एस.एल., प्रिंसीपल्स ऑफ इक्नोमिक्स, प्राचीन , भारत
11. मजूमदार, आर.सी., दी क्लासीकल ऐज, भारतीय विद्या भवन, बम्बई, 2009